टाना भगत आंदोलन

जिन बुनियादों पर मुंडाओं का बिरसा आंदोलन खड़ा था, उन्हीं बुनियादों पर और उसी के प्रभाव से 1915 ई. के आस-पास छोटा नागपुर की धरती पर उरांवों द्वारा एक आंदोलन की शुरुआत की गई। उस आंदोलन को टाना भगत आंदोलन के नाम से जाना जाता है। इस आंदोलन का सूत्रधार गुमला सबडिविजन विसुनपुर थाना के चरपी नावाटोली ग्राम निवासी एक युवक जतरा उरांव था।

अंग्रेजी शासनकाल में जनजातीय भूमि व्यवस्था बिल्कुल नष्ट कर दी गई थी। इसका प्रभाव जनजातियों के आर्थिक जीवन के साथ-साथ सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक व्यवस्था पर भी व्यापक रूप से पड़ा था। उरांवों ने देखा कि उनके देवी-देवता असमर्थ एवं शक्तिहीन होते जा रहे हैं। ईसाई एवं गैर ईसाई जनजातियों के बीच सामाजिक एवं धार्मिक खाई उत्पन्न हो गई थी। उनके ग्राम संगठन विघटित हो रहे थे। सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था धराशाही हो रही थी। आर्थिक व्यवस्था दम तोड़ चुकी थी। अंग्रेजों, अफसरों, सैनिकों, सिपाहियों, पादरियों, जमींदारों, ठेकेदारों, जागीरदारों इत्यादि का शोषण एवं उत्पीड़न दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा था। अंग्रेजों के साथ युद्ध में उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा था। गैर-ईसाई एवं ईसाई के बीच बंट जाने के कारण उनका संगठन भी कमजोर हो गया था। अत: उरांव युवजनों ने इस स्थिति से मुक्ति पाने का मार्ग धर्म एवं ईश्वर में ढूंढा।

जतरा उरांव एक 25 वर्षीय युवक था। वह नित्य एक ओझा के अधीन धार्मिक प्रशिक्षण ले रहा था। एक रात्रि को वह जब प्रशिक्षण प्राप्त कर घर लौट रहा था, तब रास्ते में उसे उरांव के सर्वश्रेष्ठ देवता धर्मेश से भेंट हुई। धर्मेश उसे मांस, मदिरा, हड़िया तथा बलि पर प्रतिबंध लगाने का आदेश दिया। उसने बतलाया कि तुम्हारी अवनति एवं पराजय का मुख्य कारण धर्म भ्रष्ट हो जाना है। धर्म की रक्षा बगैर विजय नहीं प्राप्त हो सकती है। धर्मेश की आराधना से ही समाज की उन्नति होगी। धर्मेश उसे साफ-सफाई से रहने, भूत-प्रेत को नहीं मानने, डायन में विश्वास नहीं करने, धर्मेश तथा धरती माता की पूजा करने के लिए आदेश दिया।

Scanned with CamScanner

दूसरे दिन प्रातःकाल से ही जतरा ने धर्मेश के ईश्वरीय आदेशों को उरांवों के बीच प्रचारित-प्रसारित करना आरंभ कर दिया। उसने उरांव लोगों से कहा कि धर्मेश नहीं चाहते हैं कि उनकी धरती मां बारंबार अपमानित हो। उनके बच्चे सदा पराजय का सामना करें तथा उनके समाज का अवनति दिनों-दिन बढ़ता ही जाये। लेकिन इसके लिए हमें शुद्ध धार्मिक जीवन व्यतीत करना होगा। मांस, मदिरा, हड़िया, दारु, बलि इत्यादि को छोड़ना पड़ेगा। भूत-प्रेत तथा डाइन में विश्वास नहीं करना होगा। जो व्यक्ति धर्मेश के ईश्वरीय आदेशों का पालन नहीं करेगा उसकी बरबादी अवश्य होगी। उसे कोई शक्ति रक्षा नहीं करेगी। धर्मेश के ईश्वरीय आदेश का व्यापक प्रभाव उरांव बंधुओं पर पड़ा। अब टाना भगतों का एक दल संगठित हो गया। टाना भगत आंदोलन से जुड़े लोग शुद्ध-सात्विक जीवन अपनाए। वे लोग बाल-दाढ़ी बढ़ा लिए। नित्य स्नान करके भोजन ग्रहण करते। वे लोग जनेव धारण किए। ललाट पर चंदन का टीका लगाते। गले में तुलसी की माला पहनते। वे लोग दल बनाकर तथा टना-टन की आवाज करते इस गांव से उस गांव तक जाया करते थे। धीरे-धीरे टाना भगत आंदोलन दावानल की भांति संपूर्ण क्षेत्रों में फैल गया।

बाद में चलकर उरांवों का यह पुनर्जागरण आंदोलन शोषण मुक्ति से संकल्प में परिणत हो गया। उरांव लोग जमींदारों, सूदखोरों, महाजनों, ठेकेदारों, पादरियों, अफसरों इत्यादि के लिए काम करना छोड़ दिया। इससे आस-पास के क्षेत्रों में आतंक छा गया। जतरा उरांव को बंदी बना लिया गया। उसके साथ उसके सात अनुयायियों को भी जेल भेजा गया। उन लोगों को एक वर्ष कैद की सजा सुनाई गई थी। लेकिन जब उन लोगों ने अंग्रेज अफसरों के सामने यह स्वीकार किया कि भविष्य में कभी भी अफवाह नहीं फैलायेंगे तब उन्हें छोड़ दिया गया था। इस घटना के बाद जतरा उरांव के क्रियाकलाप के ऊपर प्रतिबंध लगा दिया था।

जतरा को शांत हो जाने के बाद भी टाना भगत आंदोलन थम नहीं सका। यह आंदोलन फैलता ही गया। यह आंदोलन नए विचारों एवं भावनाओं से इतना ओत-प्रोत हो गया कि उसे नियंत्रित करना कठिन हो गया था। टाना भगतों द्वारा टना-टन बजाते तथा धर्मेश के गीत गाते हुए पुराने देवी-देवताओं, प्रेतात्माओं, भूत-प्रेतों इत्यादि को गांव से बाहर भगाते चलते थे।

एक बार मुड़मा में नया भगत के नेतृत्व में टाना भगतों की एक विशाल सभा आयोजित की गई। इसमें काफी दूर-दूर के टाना भगत शामिल हुए। टाना भगतों के आंदोलन से अफसर तथा जमींदार काफी परेशान थे। क्योंकि उन्हें अब रेजा या कुली नहीं मिल रहा था। खार खाए अंग्रेज डी.एस.पी. पुलिस बल के साथ उन्हें गिरफ्तार करने पहुंचे। उन्हें गिरफ्तार करके दूर जंगलों में छोड़ दिया गया था। लेकिन फिर भी वे हतोत्साहित नहीं हुए। अंग्रेज अफसर टाना भगतों को देशद्रोही कहा करते थे।

टाना भगत 1917 ई. में गांधी जी के संपर्क में आए। राँची में गांधी जी का भाषण सुनकर ये लोग अत्यंत प्रभावित हुए और राष्ट्रीय आंदोलन की ओर उन्मुख हुए। अब खादी,

Scanned with CamScanner

कांग्रेस और तिरंगा के प्रति इनकी आस्था जगी। गांधी जी के असहयोग आंदोलन में इन लोगों ने सहर्ष भाग लिया तथा अंग्रेजों एवं जमींदारों को कर देना बंद किया। उरांव समाज में ऐसी धारणा बनी तथा विश्वास उत्पन्न हुआ कि जतरा का पुनर्जन्म महात्मा गांधी के रूप में हुआ है। टाना भगतों ने कांग्रेस के गया, रामगढ़ तथा नागपुर अधिवेशनों में भाग लिया था। जब ये लोग लगान देना बंद कर दिए थे, तब अंग्रेज अफसर द्वारा इनकी जमीनें नीलाम कर दी गई थी, इससे अधिकांश भूमिहीन हो गए तथा श्रमिक बन गए। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बिहार सरकार द्वारा टाना भगतों की जमीन वापस कराई गई है। उनके लिए अनेक विकास कार्यक्रम चलाए गए हैं। उनके बच्चों की शिक्षा हेतु टाना भगत आवासीय विद्यालय खोले जा रहे हैं। उनकी जमीन वापसी के लिए टाना भगत रैयत भूमि पुनर्वापसी कानून 1948 में पारित किया गया।

Scanned with CamScanner